[Shukla., Vol.3 (Iss.11): November, 2015]
ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i11.2015.6307

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

Independence Movement in Bastar District 1910-1947
बस्तर जिले में स्वाधीनता आन्दोलन सन् 1910-1947

Dr. Pradeep Shukla Professor [*1]
[*1] Department of History Guru Ghasidas University, Bilaspur, India

ABSTRACT

Bastar, the largest but unique district and division of Madhya Pradesh, is a tribal dominated area covered with rugged forests and mountain ranges located in the far-east south part of the state, which is moving towards development while preserving its ancient culture and traditions alive. In ancient times, it was known as the sub geographical region called Dandakaranya where traditional culture has been a unit.
Before the merger of the state, Bastar district was formed in 1948 by combining both the princely states of Bastar and Kanker. Which is the first largest district in the state and the third largest district in the country in terms of area. Before independence, Bastar princely state had seven (7) parganas located around Jagdalpur and eighteen (18) forts located to the north of Indravati river and twelve amindaris located in the south west.

शोध सारांश

मध्यप्रदेश का सबसे विशाल किन्तु निराला जिला एवं संभाग बस्तर, राज्य के सुदूर-पूर्व दक्षिण भाग में स्थित बीहड़ वनों, और पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जो अपनी प्राचीन संस्कृति और परम्पराओं को जीवन्त संजोये हुए विकासोन्मुखी की ओर अग्रसर हो रहा है, प्राचीन काल में इसे दण्डकारण्य नामक उप भौगोलिक खण्ड के नाम से जाना जाता था जहां परम्परागत संस्कृति का इकाई रहा है।

राज्य विलीनीकरण के पूर्व बस्तर और कांकेर दोनों रियासतों को मिलाकर सन् 1948 बस्तर जिला का गठन किया गया। जो क्षेत्रफल के दृष्टि से राज्य में प्रथम व देश में तीसरा बड़ा जिला है. स्वतंत्रता के पूर्व बस्तर रियासत के अन्तर्गत जगदलपुर के चारों ओर स्थित सात (7) परगने व इन्द्रावती नदी के उत्तर में स्थित अठारह (18) गढ़ और दक्षिण पश्चिम में स्थित बारह अमींदारियां थी।

Cite This Article: Dr. Pradeep Shukla, "INDEPENDENCE MOVEMENT IN BASTAR DISTRICT 1910-1947" International Journal of Research – Granthaalayah, Vol. 3, No. 11 (2015): 206-209.

1. प्रस्तावना

मध्यप्रदेश का सबसे विशाल किन्तु निराला जिला एवं संभाग बस्तर, राज्य के सुदूर-पूर्व दक्षिण भाग में स्थित बीहड़ वनों, और पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जो अपनी प्राचीन संस्कृति और परम्पराओं को जीवन्त संजोये हुए विकासोन्मुखी

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i11.2015.6307

की ओर अग्रसर हो रहा है, प्राचीन काल में इसे दण्डकारण्य नामक उप भौगोलिक खण्ड के नाम से जाना जाता था जहां परम्परागत संस्कृति का इकाई रहा है।

राज्य विलीनीकरण के पूर्व बस्तर और कांकेर दोनों रियासतों को मिलाकर सन् 1948 बस्तर जिला का गठन किया गया। जो क्षेत्रफल के दृष्टि से राज्य में प्रथम व देश में तीसरा बड़ा जिला है. स्वतंत्रता के पूर्व बस्तर रियासत के अन्तर्गत जगदलपुर के चारों ओर स्थित सात (7) परगने व इन्द्रावती नदी के उत्तर में स्थित अठारह (18) गढ़ और दक्षिण पश्चिम में स्थित बारह अमींदारियां थी.

13 मार्च 1854 में जनरल लार्ड डलहौजी ने ''गोद निषेध'' सिद्धांत को क्रियात्मक रूप देते हुए, बस्तर के भोंसला साम्राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में विलय करने की घोषणा कर दी. इस घोषणा के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश साम्राज्य की छत्र छाया प्रत्यक्ष रूप से आया। फरवरी 1855 ई. को चार्ल्स ईलियट छत्तीसगढ़ के डिप्टी कमिश्नर के पद पर आसीन हुए. यही राजनीतिक फेरबदल के साथ ही बस्तर में भी अंग्रेजी शासन का प्रभावी युग प्रारंभ हो गया। जो सन् 1947 तक चला। अंग्रेज बस्तर अरण्यक की प्राकृतिक सम्पदा का अनुमान के अनुरूप अपनी सत्ता में लेने के साथ-साथ वे राजा तथा प्रजा को संत्रस्त करने लगे। चूंकि वे समा गये थे कि बस्तर के भोले-भाले स्वतंत्रता प्रिय आदिवासी जनता राजा को देव तुल्य समझते थे। इसका राजनीतिक लाभ अंग्रेजों ने ब्रिटिश साम्राज्य के आश्रित होने के कारण बस्तर के राजा को पंगु बनाकर रखे और अपनी कुटनीतिक बाल से राजा के द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के मुताबिक शासन संचालित कराये गये जिससे वहां की जनता राजा की आज्ञा व शासन को ही शिरोधार्य करती थी।

ब्रिटिश शासन का दिनोदिन बढ़ता हुआ हस्तक्षेप अत्याचार, शोषण एवं उनकी दमनकारी रणनीतियों का पल्ला भारी होता जा रहा था। परन्तु धैर्य व सहनशील की पराकाष्ठा ने अदिवासियों को इसका प्रतिकार व प्रतिशोध की भावना ने राजवंश के विरोध के माध्यम से ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करने हेतु एक स्वर से उद्वेलित हो उठे. और आदिवासी जनता विद्रोह व संघर्ष के द्वारा राष्ट्र आन्दोलन के मुख्य धारा से जुड़ गये।

बस्तर में आदिवासी जनजातीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन से भी पुराना है. गांधी जी के अवतरण के पूर्व ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद से बस्तर की जनता ने एक या दो बार नहीं अपितु दसों बार सशस्त्र संघर्ष किये थे. बस्तर के आदिवासी जनजातीय उन प्राचीनतम सैन्य दलों में से है. जिन्होंने 1774 से ही विदेशी शासकों के खिलाफ संघर्ष छेड़ दिया था. समूचे भारत में मुक्ति संग्राम के प्रवर्तक की दृष्टि से बस्तर के आदिवासी प्रथम है इन संघर्षो को कुछ इतिहासकारों ने ''स्थानीय उपद्रव'' कह कर टाल दिये गये और अन्त में ''ये स्वाभाविक तौर पर आदिवासी उन्माद का विस्फोटक है'' कहा गया. जो भारतीय जनता की गुलामी और शोषण के खिलाफ संघर्ष में बस्तर के विद्रोह सांझी विरासत का ही भाग था।

रियासत कालीन बस्तर में मुख्य रूप से दो बार अशांति का वातावरण निर्मित हुआ पहली बार सन् 1876 में, दूसरी बार सन् 1910 का विद्रोह जो स्वतंत्रता संग्राम को मुख्य धारा से जोड़ा. सन् 1910 का विद्रोह पर प्रकाश डाले तो यह विद्रोह ''बस्तर. बस्तर वासियों का है'' के नारे के साथ प्रारंभ हुआ और इस विद्रोह का मुख्य विशेषता यह रही की उसकी तैयारी गुप्त रूप से की गयी थी. जिसका तुलना हम 1857 विद्रोह के पूर्व ''रोटी और लाल कमल के फूल'' गांव-गांव घुमाकर कांति का प्रचार किया गया था. इसी भांति ही सन् 1910 की क्रान्ति के पूर्व बस्तर के गांवों, कस्बों, में ''एक तीर लाल मिर्च'' मिट्टी का टुकड़ा, धनुष और भालों की अनुकृति घुमायी गयी थी. यह विद्रोह की संकेतिक प्रतीक ने सभी को विद्रोह हेतु प्रेरित किया जिससे बस्तर क्रान्ति में भतरा, भुरिया, माड़िया, हल्बा, धाकड़, गाड़ा और महार जाति के लोगों ने विशेष रूप से भाग लिया. इस क्रान्ति का प्रभाव बहुत बड़ा भू-भाग पर पड़ा, इसी संदर्भ में श्री व्ही. राघवैह ने लिखा है कि ''जमींदारो और अबुझमाड़ियों को छोड़कर शेष सभी बस्तरवासी इस विद्रोह में सम्मिलित थे।''

उक्त क्रान्तिकारी संघर्ष अंग्रेजों द्वारा नियुक्त दीवान के खिलाफ था पर वस्तुतः यह माध्यम मात्र रहा. मुख्य रूप से यह अंग्रेजों के विरूद्ध था. इसका प्रभाव ''बस्तर-बस्तर वासियों के लिये है. किसी बाहरी व्यक्ति का नहीं'' इस कथन से साबित होता है. अंग्रेजी

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i11.2015.6307

सर्वोच्चता के युग में बस्तर के आदिवासी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए संघर्ष किये. इस संघर्ष का प्रारंभ 2 फरवरी 1910 को ''पूसपाल बाजार'' की लूट से हुआ. विद्रोह लगभग ढाई महीना तक चलता रहा. इस विद्रोह का समाचार सुन कर राजा रूद्रप्रताप देव ''किंकर्तव्यविमूढ़'' सा हो गये और असमंजस की स्थिति में अन्ततः विद्रोह की सूचना तार द्वारा 7 फरवरी को ब्रिटिश अधिकारियों और रायपुर स्थित पोलिटिकल एजेंट और चीफ कमिश्नर नागपुर को भेजी व सहायता की मांग की। मि. गेयर और मि. डीब्रे को बस्तर विद्रोह को दबाने का भार सौंपा गया।

अतः 500 सैनिक लेकर वे बस्तर की ओर रवाना हुए. बीच में ही कुछ सैनिक टुकड़ियों को विद्रोहियों ने घेर लिया, जिसे गोलीबारी में 5 आदिवासी मारे गये जब दल जगदलपुर पहुंचां तो मि. गेयर व मि. डिब्रे ने विद्रोहियों से समझौता करने का प्रयास भी किया जो असफल रहा. फलतः विद्रोहियों का संघर्ष सर चढ़ कर बोलने लगा और कई अंग्रेजी अफसरों व कार्यालयों में कई स्थानों पर आगजनी की गयी। अंग्रेज सैनिक व अधिकारी परेशान थे, इसी बीच अलनार के वन में मारने मरने को उद्यत आदिवासी की एक टुकड़ी विश्राम कर रही थी। जिसकी सूचना कोई विश्वासघाती ने अंग्रेज अधिकारी को दी। जिससे अंग्रेज सैनिक दल पीछे से गोली-बारी की, इसमें 21 आदिवासियों का मौत और सैकड़ो घायल हुए. इस घटना का लोक विश्वास के अनुसार 4-5 सौ आदिवासी मारे गये थे तथा घायलों की संख्या हजारों में थी। इस घटना का रिपोर्ट अंग्रेजों ने 39 लोग मारे गये बताये। इस घटना की तुलना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के त्रासदी सन् 1919 जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड से की जा सकती है।

1910 के विद्रोह को दबाने के लिए काफी दमनात्मक नीति का प्रश्रय लिया गया. साथ ही साथ धन जन की हानि हुयी तथा अधिकांश व्यक्ति जब अंग्रेजी अत्याचारों के निशान बन गयी. कइयों को गोली से उड़ाया गया, फांसी दी गयी, रियासत से निकाला गया तथा कई गांव उजाड़ दिये गये और सामूहिक जुर्माना से लगभग 45 हजार रूपए वसूला गया। इस संघर्ष को दबाने में लगभग 60 हजार रूपए खर्च हुए जो बस्तर रियासत से वसूलना तय किया गया. उक्त विद्रोह रूपी संघर्ष के संबंध में कहा जा सकता है. बस्तर आदिवासी जनजातियों के मन में राष्ट्रीयता की भावना राष्ट्रीय आन्दोलन कूट कूटकर भरी थी। यही भावना से फलीभूत प्रेरण ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध किये गये शंखनाद गांधी युग में राष्ट्रीय स्तर के रूप में बदल गया।

मध्य प्रान्त के छत्तीसगढ़ क्षेत्र के जिला रायपुर पोलिटिकल एजेंटों का केन्द्र था. यहां 1919 में द्वितीय राजनीतिक परिषद का सफल आयोजन किया गया. अंग्रेज रायपुर में स्थित पोलिटिकल एजेंट द्वारा बस्तर में प्रबंधन करते थे। राष्ट्रीय जागरण एवं देशोद्वार के जिन कार्यक्रमों का प्रचार महात्मागांधी जी ने असहयोग आन्दोलन के प्रारंभिक काल में किया गया वह मध्य प्रांत के रायपुर जिले में उसका विधिवत प्रचार-प्रसार किया गया। कांग्रेस का काकीनाड़ा अधिवेशन सन् 1923 में मौलाना मुहम्मद अली की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। यह कांग्रेस का अधिवेशन एक सुनियोजित आधार पर किया। इस अधिवेशन में कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में विभिन्न स्थानों एवं आसपास से लगभग 25 कार्यकर्ताओं का जत्था भाग लेने गया था. यह यात्रा उन देश के कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में चिन्हित किया। काकीनाड़ा कांग्रेस अधिवेशन के लिये पदयात्रा जहां एक ओर स्थानीय नेताओं एवं स्वयं सेवकों की कर्मठता का परिचय देती है, वहीं दूसरी ओर ऐसे क्षेत्र में राष्ट्रीयता का प्रचार किया जहां अभी तक राष्ट्रीयता की किरण भी नहीं पहुंची थी।

काकीनाड़ा चूंकि बस्तर रियासत की सीमा से लगा था, इसलिए बस्तर के आदिवासी क्षेत्रों में राष्ट्रीयता एवं जनजागरण का बीज बोया, और दुर्गम मार्ग को पार कर बस्तर से पदयात्रा जत्था दल महात्मा गांधी जी के सन्देश को जन-जन को रास्ते में गांव व कस्बों के लोगों को सुनाता हुआ कांग्रेस अधिवेशन के पूर्व काकीनाड़ा पहुंचे। जिन-जिन गांवों में कस्बों में सत्याग्रही गुजर रहे थे, वहां लोगों में जनजागरण को प्रोत्साहित करते हुए इस हेतु जनाध्यान को आकर्षित करने के उद्देश्य से नेताओं के चित्र साथ रखे थे।

काकीनाड़ा का कांग्रेस अधिवेशन आदिवासियों में जनजागरण के लिये काफी प्रेरणास्पद थी। और रचनात्मक कार्यों पर भी जोर दिया, खादी की उपयोगिता पर बल दिया गया. महात्मा गांधी जी कहते थे- भारत में अंग्रेजी राज्य रूपी बीमारी अब बहुत लम्बी

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i11.2015.6307

और न सुधरने वाली है. इसके लिये बहुत सी योग्य चिकित्सा की आवश्यकता है, और रोग के लिये दवा का सेवन अत्यंत आवश्यक है. चरखा ही अत्यंत प्रभावकारी दवा है। जिसका जनता प्रयोग करे और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल बनाये. सन् 1945 में बस्तर में ठाकुर प्यारे लाल सिंह के नेतृत्व में बस्तर एवं कांकेर में स्टेट पीपुल्स कांग्रेस का गठन हुआ. जिसके ठाकुर प्यारे लाल सिंह अध्यक्ष तथा जयनारायण पाण्डेय उसके सचिव थे। श्री विनायक सखाराम दाण्डेकर, श्यामनारायण कश्मीरी और मदरलाल बाकड़ी, बस्तर स्टेट पीपुल्स कांग्रेस के सदस्य थे. ये नेता स्वतंत्र समाजवादी विचारधारा के थे. जिन्होंने आदिवासी जनजातीय से भरा अंचल में राष्ट्रीय चेतना जागृत कर लोगों में रियासतों के विलीनीकरण, हेतु भी प्रेरित किया गया।

रियासत विलीनीकरण पश्चात् स्टेट कांग्रेस की भी स्थापना हुयी. इसमें बस्तर से अध्यक्ष पद पर श्री पी.सी. नायडू उपाध्यक्ष थे नरसिंह राव वकील तथा अन्य सदस्य गंगाचरण बाजपेयी, श्री अभिमन्यु रथ, तथा लक्ष्मी चन्द जैन प्रमुख थे। इसी प्रकार कांकेर में गठित स्टेट कांग्रेस में भी श्री राय प्रसाद पोटाई अध्यक्ष एवं वृंदावन बिहारी अग्रवाल उपाध्यक्ष थे। पं. गोविन्द प्रसाद शर्मा, सेठ रानूलाल जी कोचर, पं. हनुमान प्रसाद, पं. केदारनाथ जी, सेठ हबीब भाई, पं. नागरदास, कुशल चन्द टांक एवं खेदूसिंह जी प्रमुख थे. जिनके नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा व प्रेरणा प्राप्त हुयी और स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल जोर से बजने लगा।

जून 1946 में विद्यार्थी कांग्रेस का स्थापना हुआ, जो स्टेट कांग्रेस स्थापना का ही परिणाम स्वरूप राजनैतिक जागरण का उदाहरण था. विद्यार्थी कांग्रेस के नवयुवकों ने आम जनता में अपने आम सभा के माध्यम से जन संचार किया. जिसका लोगों में प्रभाव पड़ा उपरोक्त विद्रोह, संघर्ष क्रान्तिकारी गतिविधियां स्वाभाविक तौर पर आदिवासी जनजातीय उन्माद का विस्फोटक ना होकर नैतिक स्वतंत्रता हेतु बलिदान का संघर्ष का इतिहास था. जो भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के समानांतर चलकर बस्तर के आदिवासियों का नाम भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ

[1] बस्तर आरण्यक, प्रो. रामकुमार बेहार पृ.क.70

[2] छत्तीसगढ़ का इतिहास, डा. बी.एस.वर्मा पृ.क.119

[3] छत्तीसगढ़ का इतिहास, डा. बी.एस.वर्मा पृ.क.101

[4] बस्तर का मुक्ति संग्राम, डा. हीरालाल शुक्ल पृ.क.8

[5] बस्तर आरण्यक, प्रो. रामकुमार बेहार पृ.क.62

[6] बस्तर आरण्यक, प्रो. रामकुमार बेहार पृ.क.62

[7] छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, डा. अशोक शुक्ल पृ.क.251

[8] बस्तर आरण्यक, प्रो. रामकुमार बेहार पृ.क.69

[9] फारेन सेक्रेटरी रिपोर्ट, प्रोसीडिंग्स नं 37 पैरा 12, 13 अगस्त

[10] फाईल नं. आर 1119/2 ओ.पी. सिल, इतिहास संगोष्ठी पत्र जगदलपुर, डा. श्रीमती रेणुका झा 24.3.92

[11] बस्तर एक अध्ययन म,ेंश्रीमती रेणुका झा का शोध लेख पृ.क्र.37

[12] पूर्वोक्त, पृ.क्र. 38

[13] मध्यप्रदेश के स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास, द्वारिका प्रसाद मिश्र 1956, पृ.क्र. 285

[14] शोभाराम देवांगन, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, स्वतंत्रता आन्दोलन में धमतरी नगर एवं तहसील का योगदान पृ. 170-74 अप्रकाशित पांडुलिपि इतिहास संगोष्ठी शोध पत्र डॉ. श्रीमती रेणुका झा पृ. 24

[15] मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक भाग-3 पृ. 222

[16] मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक भाग-3 पृ. 223